vinetur

फ्रांस की वाइन फसल 2026 में 70 साल के निचले स्तर पर आ सकती है।

अत्यधिक गर्मी और सूखे ने पैदावार घटाई है, जिससे Burgundy सहित प्रमुख क्षेत्रों में तोड़ाई पहले करनी पड़ रही है।

बुधवार, 23 सितंबर 2026



फ्रांस का वाइन उद्योग दशकों की सबसे कमजोर फसलों में से एक की ओर बढ़ रहा है, क्योंकि अत्यधिक गर्मी और सूखे ने पैदावार घटाई है, पकने की प्रक्रिया तेज की है, और पहले से ही ऊँची लागत तथा कमजोर मांग से जूझ रहे इस क्षेत्र पर नया दबाव डाला है।

फ्रांस के कृषि मंत्रालय ने चेतावनी दी है कि 2026 में राष्ट्रीय वाइन उत्पादन लगभग 70 वर्षों में अपने सबसे निचले स्तर तक गिर सकता है। सरकार की सांख्यिकी एजेंसी Agreste द्वारा उद्धृत आधिकारिक अनुमानों के अनुसार, इस वर्ष का उत्पादन 34 मिलियन हेक्टोलिटर से कम रह सकता है, जो 2025 से 6% कम और पांच वर्षीय औसत से 17% नीचे है।

यदि इसकी पुष्टि होती है, तो यह गिरावट लगातार तीसरे वर्ष उत्पादन में कमी को चिह्नित करेगी और फ्रांस के सबसे

महत्वपूर्ण कृषि और निर्यात उद्योगों में से एक की चिंता और गहरी करेगी। फ्रांस दुनिया के प्रमुख वाइन निर्यातकों में शामिल है, इसलिए वहाँ छोटी फसल वैश्विक आपूर्ति को कस सकती है, कुछ श्रेणियों में कीमतें बढ़ा सकती है, और आयातकों, वितरकों तथा पेय कंपनियों को खरीद अनुबंधों और निर्यात योजनाओं पर फिर से विचार करने के लिए मजबूर कर सकती है।

अधिकारियों और उत्पादकों का कहना है कि जलवायु परिवर्तन अब अंगूर की फसल के समय और गुणवत्ता में साफ दिखाई दे रहा है। अधिक तापमान और लंबी शुष्क परिस्थितियों ने अंगूरों को सामान्य से पहले पकने पर मजबूर किया है, जिससे तोड़ाई का समय-खिड़की छोटी हो गई है और वाइनरी को पहले की तुलना में अधिक तेजी से श्रमिकों और उपकरणों को जुटाना पड़ रहा है। मौसम के बदलते पैटर्न आदर्श फसल तिथि को भी जल्दी बदल सकते हैं, इसलिए उत्पादकों के सामने अनिश्चितता और बढ़ गई है।

Burgundy में इस वर्ष अंगूर की तोड़ाई 14 अगस्त को शुरू हुई, जिसे फ्रांसीसी वाइन संघ ने इस क्षेत्र में अब तक की सबसे शुरुआती शुरुआत बताया। यह बदलाव दिखाता है कि देश के उन हिस्सों में खेती का कैलेंडर कितनी तेजी से बदल रहा है, जो अपेक्षाकृत ठंडी परिस्थितियों और कड़े प्रबंधन वाले उत्पादन के लिए जाने जाते हैं।

फ्रांस के वाइन क्षेत्रों में नुकसान समान रूप से नहीं फैला है। रिपोर्ट के अनुसार, परंपरागत रूप से ठंडे Loire Valley और Champagne जैसे क्षेत्र गर्मी से विशेष रूप से प्रभावित हुए हैं। इसके विपरीत, Bordeaux और Languedoc-Roussillon सहित दक्षिणी फ्रांस के कुछ हिस्सों में पिछले साल की तुलना में उत्पादन में बढ़ोतरी दर्ज की गई है, जिससे पता चलता है कि एक ही देश के भीतर भी स्थानीय परिस्थितियाँ अभी भी काफी अलग हो सकती हैं।

हालाँकि, व्यापक राष्ट्रीय तस्वीर नकारात्मक बनी हुई है। फ्रांस ने अपने इतिहास की सबसे गर्म गर्मियों में से एक का अनुभव किया, जिसमें बार-बार लू चली और कई क्षेत्रों में तापमान 40C से ऊपर गया। सूखी मिट्टी, तेज धूप का दबाव और बेलों पर तनाव ने अंगूरों के विकास को कम किया और कुछ मामलों में कटाई दलों के खेत तक पहुँचने से पहले ही फल सिकुड़ गए। इन परिस्थितियों ने पहले की उस उम्मीद को उलट दिया जिसमें अधिक अनुकूल वसंत के बाद बेहतर फसल की आशा थी।

उत्पादन में गिरावट वाइन उगाने वालों और उत्पादकों के लिए भी कठिन समय में आई है। यह क्षेत्र बढ़ती उत्पादन लागत, धीमी बिक्री और कमजोर घरेलू खपत का भी सामना कर रहा है। ये दबाव खास तौर पर छोटे व्यवसायों पर भारी पड़ रहे हैं। रिपोर्ट के अनुसार, वाइन-क्षेत्र की व्यावसायिक बंदियों की संख्या 2019 और 2025 के बीच लगभग तीन गुना हो गई।

यह आर्थिक दबाव अब और गंभीर होता जा रहा है क्योंकि जलवायु-जनित व्यवधानों को अब अलग-थलग घटनाओं के रूप में देखना कठिन हो रहा है। पहले की तोड़ाई से श्रम लागत बढ़ सकती है, क्योंकि उत्पादकों को कम नोटिस पर बड़ी टीमों की जरूरत पड़ती है। अचानक तापमान-उछाल अंगूरों के संतुलन और शैली को भी प्रभावित कर सकते हैं, जिससे उन क्षेत्रों में गुणवत्ता संबंधी चिंताएँ बढ़ती हैं जो लंबे समय से चले आ रहे उत्पादन नियमों और स्थापित स्वाद प्रोफाइल पर आधारित हैं। फिर उत्पादकों को तय करना पड़ता है कि वे दाखबारी की पद्धतियाँ बदलें, अलग अंगूर किस्में अपनाएँ, या बाज़ार रणनीतियाँ समायोजित करें, जबकि वे अभी भी फ्रांस की कड़ी अपेलेशन प्रणाली के भीतर काम कर रहे हों।

इसलिए उद्योग की चुनौतियाँ सिर्फ एक खराब मौसम तक सीमित नहीं हैं। उत्पादकों को तेजी से ऐसी उत्पादन-चक्र के अनुरूप ढलना पड़ रहा है जो अब ऐतिहासिक पैटर्न का पालन नहीं करता। कई उत्पादकों के लिए, खासकर उन प्रीमियम क्षेत्रों में जहाँ परंपरा ब्रांडिंग और विनियमन में बड़ी भूमिका निभाती है, यह अनुकूलन महँगा और धीमा होने की संभावना है।

इसके असर फ्रांस से बहुत आगे तक जा सकते हैं। कमजोर फ्रांसीसी फसल व्यापक पेय बाज़ार को प्रभावित कर सकती है, क्योंकि फ्रांसीसी वाइन प्रीमियम निर्यात चैनलों और वैश्विक रेस्तरां, रिटेल और हॉस्पिटैलिटी बिक्री में बड़ी हिस्सेदारी

रखती है। कम उपलब्धता खरीदारों को वैकल्पिक स्रोतों की ओर धकेल सकती है, इन्वेंटरी योजना बदल सकती है, और कुछ खंडों में सीमित आपूर्ति के लिए प्रतिस्पर्धा बढ़ा सकती है। कीमतों में कोई स्थायी बढ़ोतरी भी आपूर्ति श्रृंखला के हर हिस्से में महसूस होगी, आयातकों और थोक विक्रेताओं से लेकर खुदरा विक्रेताओं और उपभोक्ताओं तक।

व्यापारिक परिस्थितियाँ अनिश्चितता की एक और परत जोड़ रही हैं। हालांकि उत्पादन का दृष्टिकोण मुख्य रूप से मौसम और जलवायु दबावों से तय हो रहा है, यह क्षेत्र अंतरराष्ट्रीय टैरिफ़ की धमकियों और बदलती निर्यात मांग से आकार पाए माहौल में भी काम कर रहा है। इससे उत्पादकों के लिए छोटी फसल के हिसाब से योजना बनाना और कठिन हो जाता है, खासकर तब जब मार्जिन पहले से ही दबाव में हैं।

अब फ्रांसीसी वाइन निर्माता एक ऐसे कठिन फसल मौसम का सामना कर रहे हैं जिसमें जलवायु जोखिम, आर्थिक कमजोरी और बदलती बाज़ार परिस्थितियाँ सब एक साथ आ रही हैं। किसान और उत्पादक खेती के तरीकों, अंगूरों के चयन और वाणिज्यिक रणनीतियों को कितनी तेजी से समायोजित कर पाते हैं, यह तय करने में बड़ी भूमिका निभाएगा कि उद्योग उत्पादन में बार-बार होने वाले नुकसान को और कितना झेल सकता है।